

कुरआन की सबसे महानतम आयत की सरल व्याख्या: आयतुल कुरसी

विवरण: यह पाठ आयतुल कुरसी को याद करने और इसके अर्थ को समझने में सहायक है।

द्वारा Imam Mufti

प्रकाशित हुआ 08 Nov 2022 - अंतिम बार संशोधित 07 Nov 2022

श्रेणी: पाठ > [पवित्र कुरआन](#) > [चयनित छंद की व्याख्या](#)

आवश्यक शर्तें

- अल्लाह पर विश्वास (2 भाग)

उद्देश्य

- सरल भाषा में आयतुल कुरसी का अनुवाद और व्याख्या सीखना।

अरबी शब्द

- [\[?\]\[?\]\[?\]\[?\]](#) - प्रभुत्व, नाम और गुणों के संबंध में और पूजा की जाने के अधिकार में अल्लाह की एकता और विशिष्टता।
- [\[?\]\[?\]\[?\]](#) - आस्तिक और अल्लाह के बीच सीधे संबंध को दर्शाने के लिए अरबी का एक शब्द। अधिक विशिष्ट रूप से, इस्लाम में यह औपचारिक पाँच दैनिक प्रार्थनाओं को संदर्भित करता है और पूजा का सबसे महत्वपूर्ण रूप है।
- [\[?\]\[?\]\[?\]](#) - कुरआन का अध्याय।
- [\[?\]\[?\]\[?\]\[?\]\[?\]](#) - कुरसी।

आयतुल कुरसी

आयतुल कुरसी [\[1\]](#), कुरआन की सबसे महानतम आयत, सूरह अल-बकरा की 255 वीं आयत है। इसे पढ़ने पर बड़ी कृपा होती है। पैगंबर (उन पर अल्लाह की दया और आशीर्वाद हो) ने हमें हर अनविार्य नमाज के बाद और सोने से पहले इसे पढ़ने का निर्देश दिया है। आयतुल कुरसी शैतान के खिलाफ सबसे शक्तिशाली सुरक्षा है।

पाठ, लपियंतरण, अनुवाद और व्याख्या

"अल्लाहु ला इलाहा इल्लाहु अल हय्युल कय्यूम ला ताअ'खुजुहु सनितुव वला नौम लहु मा फसि सामावातविमा फ़लि अर्ज़ मन ज़ल लज़ी यश फ़ऊ इन्दहु इल्ला बिइजनहि यअलमु मा बैना अयदी हमि वमा खल्फहुम वला युहीतूना बशिय इम मनि इल्मही इल्ला बमि शा..अ वसअि कुरसय्यु हुस समावतविल अर्ज़ वला यऊ दुहु हफिजुहुमा वहवल अलय्युल अज़ीम" (कुरआन 2:255)

अल्लाहु ला इलाहा इल्लाहु

अल्लाह के सवा कोई पूज्य नहीं

यह तौहीद अल-उलुहिया की पुष्टि है, कि उसके अलावा कोई ईश्वर नहीं है। उसके सवा कोई पूजा का पात्र नहीं है। उसके अलावा या उसके साथ किसी की भी पूजा नहीं की जानी चाहिए। यही हमारे जीवन का उद्देश्य है और यही कारण है कि अल्लाह ने पैगंबरो को भेजा और पुस्तके भेजीं। और अंत में, यह वह पहलू है जिसके बारे में हमें न्याय के दिन आंका जाएगा।

الْحَيُّ الْقَيُّومُ

अल हय्युल कय्यूम

वह जीवति तथा नतिय स्थायी है

पूर्ण शाश्वत जीवन का स्वामी, जो जीवन से पहले था और उसका अस्तित्व कभी समाप्त नहीं होगा। वह पहला है जिसकी शुरुआत नहीं हुई, और अंत तक रहेगा बना समाप्त के। उसके पहले या बाद में कुछ भी नहीं है। वह पूरे ब्रह्मांड को जीवन देता है, लेकिन कोई भी उसे जीवन नहीं देता है। उत्तम जीवन का अर्थ है कि उनके पास श्रवण, दृष्टि, शक्ति और ज्ञान जैसे उत्तम गुण हैं। उनका जीवन मानव जीवन जैसा नहीं है।

अल्लाह आत्मनर्भर है जो बाकी सब का पालन-पोषण करता है। वह न तो बदलता है और न ही मटिता है। अल्लाह के बिना सृष्टि का अस्तित्व नहीं हो सकता।

अल्लाह के सवा पूजी जाने वाली हर चीज न तो हमेशा रहने वाली है और न ही सृष्टि उस पर नर्भर है। बल्कि, वे अपने भरण-पोषण के लिए अल्लाह पर नर्भर हैं।

لَا تَأْخُذُهُ سِنَّةٌ وَلَا نَوْمٌ

ला तअ'खुजुहु सनितुव वला नौम

उसे ऊंघ तथा नदिरा नहीं आती।

नींद और ऊंघ नर्मति प्राणियों पर हावी हो जाती है, लेकिन रचयिता न तो सोता है और न ही वह ऊंघता है। वह न थकता है और न वशिराम करता है। सृष्टि के वपिरीत, वह ऐसे दोषों से मुक्त है। उसका होना परंपूर्ण है। उसके पास पूर्णता और महिमा का गुण है।

لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ

लहु मा फसि सामावातविमा फ़लि अर्ज़

आकाश और धरती में जो कुछ है, सब उसी का है

उनमें से और उनके बीच जो कुछ है, वह अल्लाह का है। वह परमप्रधान, प्रदाता, राजा, नियामक है। सारी सृष्टि उसके राज्य की प्रजा है, और वह उनके साथ जो चाहे कर सकता है। अल्लाह के अलावा पूजी जाने वाली वस्तुओं का किसी भी चीज पर कोई नियंत्रण नहीं है और न ही प्रभुत्व है।

مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ

मन ज़ल लज़ी यश फ़ऊ इन्दहु इल्ला बि इज्जनिहि

कौन है, जो उसके पास उसकी अनुमति के बिना अनुशंसा (सफ़ारिश) कर सके?

कोई भी अल्लाह की अनुमति और प्रसन्नता के बिना किसी की ओर से हस्तक्षेप और किसी की वकालत नहीं कर सकता है। हर चीज पर अल्लाह का पूरा नियंत्रण है। मध्यस्थता अल्लाह की कृपा और दया से है और न्याय के दिन केवल उन लोगों के लिए आरक्षित है जिन्हें अल्लाह मध्यस्थता करने की अनुमति देगा, जैसे पैगंबर और धर्मी लोग। जो लोग अल्लाह की मध्यस्थता के लिए पूजा करते हैं, उन्हें मध्यस्थता करने का कोई अधिकार नहीं है।

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ

यअलमु मा बैना अयदी हमि वमा खल्फहुम

जो कुछ उनके समक्ष और जो कुछ उनसे ओझल है, सब जानता है

वह अपनी रचना की स्थिति जानता है। वह जानता है कि क्या था, क्या है और क्या होगा। वह जानता है कि क्या छुपा है और क्या प्रकट है। वह जानता है कि उसके प्राणियों ने क्या हासिल किया और क्या खोया। वह जानता है कि उन्होंने अतीत में क्या किया और भविष्य में वे क्या करेंगे। वह जानता है कि वे क्या छुपाते हैं और क्या दिखाते हैं। अल्लाह के ज्ञान से कुछ भी नहीं बचता। कुछ भी अल्लाह को भ्रमति नहीं करता है। अल्लाह का ज्ञान असीम है, जबकि सृष्टि सीमति है।

وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ

वला युहीतूना बशिय इम मनि इल्मही इल्ला बमि शा

उसके ज्ञान में से वही जान सकते हैं, जसि वह चाहे।

अल्लाह ने इंसानों को ज्ञान का वरदान दिया है, लेकिन मानव ज्ञान कतिना भी आगे बढ़ जाये वह दिव्य ज्ञान की तुलना में समुद्र में एक बूंद के बराबर ही रहेगा। मनुष्य स्वयं को पूर्ण रूप से नहीं जान सकता, तो वे अनदेखी दुनिया के ज्ञान को समझने की कल्पना कैसे कर सकता है? सृष्टि में से कोई भी अनदेखी दुनिया के बारे में कुछ भी नहीं जानता, सिवाय उन पैगंबरों के जिन्हें इसके बारे में कुछ ज्ञान दिया गया था।

وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ

वसअि कुरसय्यु हुस समावत विल अर्रज

उसकी कुरसी आकाश तथा धरती को समोये हुए है।

जसि प्रकार ईश्वरीय ज्ञान में समस्त सृष्टि समाहित है, उसी प्रकार कुरसी में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड समाहित है। यही अल्लाह की महानता है।

وَلَا يُؤُودُهُ حِفْظُهُمَا

वला यऊ दुहु हफिजुहुमा

उन दोनों की रक्षा उसे नहीं थकाती।

कुछ भी उसे कमजोर नहीं करता है। बड़ा हो या छोटा, आसान हो या मुश्किल, कम हो या ज्यादा, महान हो या वनिमूर - अल्लाह सबकी हफिजत करता है और ऐसा करने में जरा भी नहीं थकाता है।

وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ

वहुवल अलय्युल अजीम

वही सर्वोच्च, महान है।

अल्लाह सर्वोच्च है; उसके ऊपर कुछ भी नहीं है, और कुछ भी उसके समान नहीं है। परमप्रधान सभी

वविरण और समझ से ऊपर है। अल्लाह महमिा और पवत्रिता, पूरणता और वैभव, सुंदरता और भव्यता का स्वामी है। अल्लाह से बड़ा कुछ नहीं है क्योंकि अल्लाह सर्वोच्च, महान है।

फुटनोट:

[\[1\]](#) अल-कुरसी का छंद (कुरआन 2:255)

इस लेख का वेब पता:

<http://www.newmuslims.com/hi/lessons/72>

कॉपीराइट © 2011-2022 [NewMuslims.com](http://www.NewMuslims.com). सर्वाधिकार सुरक्षित।

ajsultan